

डॉ. डेव मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट लिटरेचर, व्याख्यान 35, रहस्योद्घाटन

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर, लेक्चर 35, द बुक ऑफ रिवीलेशन में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं।

ठीक है, आपकी आखिरी न्यू टेस्टामेंट कक्षा।

कृपया जय-जयकार न करें। जैसा कि मैंने पहले कहा था, हमें इसकी ज़रूरत है, मुझे आपको एक चौथाई बजे तक छोड़ने की ज़रूरत है क्योंकि मेरे पास पकड़ने के लिए कोलोराडो के लिए एक विमान है। तो, लगभग एक चौथाई समय के बाद, हम जो करना चाहते हैं उसे समाप्त करते हैं, हालाँकि केवल दो या तीन अंशों के संबंध में रहस्योद्घाटन की पुस्तक के बारे में संक्षेप में बात करना है।

यदि आप रुचि रखते हैं, यदि यह पर्याप्त नहीं है, तो मैं एक मई की पेशकश कर रहा हूँ, तकनीकी रूप से यह आखिरी कक्षा नहीं है जिसे मैं पढ़ा रहा हूँ। मैं रहस्योद्घाटन की पुस्तक की व्याख्या पर मई सत्र की कक्षा की पेशकश कर रहा हूँ। तो, यदि आप रुचि रखते हैं।

लेकिन मैं केवल संक्षेप में समीक्षा करना चाहता हूँ कि प्रकाशितवाक्य क्या कर रहा है और यह किस बारे में है और इसके बारे में हमने क्या बात की और फिर कुछ पाठों को देखकर इसे स्पष्ट करना चाहता हूँ। इससे पहले कि हम ऐसा करें, दूसरी घोषणा यह है कि इस कक्षा में सोमवार को, उसी समय, उसी स्थान पर, आपकी परीक्षा संख्या चार है। और मैं यहां नहीं रहूंगा लेकिन मेरा एक पूर्व टीएएस उस दौरान परीक्षा की निगरानी करेगा और फिर आप फाइनल तक चले जाएंगे।

हां। फाइनल कितने बजे है? अच्छा प्रश्न। आज बुधवार है।

मुझे लगता है कि आज बुधवार है। बुधवार, 2.30 से 4.30, ठीक है? क्या? आज बुधवार है। यह अंतिम परीक्षा सप्ताह का बुधवार है।

इसलिए, आप सुनिश्चित होने के लिए अपना शेड्यूल जांच सकते हैं। ठीक है। आइए प्रार्थना के साथ शुरुआत करें और फिर हम कुछ मिनटों के लिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को देखेंगे।

पिता, हमें सहारा देने, हमें शक्ति और ऊर्जा देने के लिए इस मुकाम तक लाने के लिए आपका धन्यवाद। और हम प्रार्थना करते हैं कि जब हम अंतिम और अंतिम परियोजनाओं का सामना कर रहे हैं और चीजों को पूरा करना शुरू कर रहे हैं तो आप हमें समर्थन देना जारी रखेंगे। भगवान, हम ऐसा करने के लिए आपकी सहायता और सक्षमता चाहते हैं। और, भगवान, मैं अब प्रार्थना करता हूँ कि जब हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के बारे में सोचते हैं तो हम इसके बारे में समझदारी से सोचना सीखेंगे और समझेंगे कि यह आज भी आपके लोगों के लिए आपके

आधिकारिक शब्द के रूप में कैसे कार्य कर रही है। यीशु के नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं। तथास्तु।

सही। मैंने आपको सुझाव दिया कि रहस्योद्घाटन की पुस्तक मुख्य रूप से उन ईसाइयों को संबोधित करने के लिए लिखी गई थी जो मुख्य रूप से पश्चिमी एशिया माइनर या आधुनिक तुर्की में रह रहे थे। मुख्य समस्या जिसका उन्हें सामना करना पड़ा वह विशेष रूप से उत्पीड़न नहीं था, हालाँकि कुछ को सताया गया था।

यीशु मसीह की गवाही देने के कारण एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई थी। लेकिन चर्च के सामने एक बड़ी समस्या उत्पीड़न नहीं बल्कि रोमन साम्राज्य के प्रति अधिक समायोजन की थी। यानी, हमने संक्षेप में सम्राट पूजा की प्रणाली पर गौर किया जो पश्चिमी एशिया माइनर के अधिकांश शहरों में व्याप्त थी।

उनमें से अनेकों ने सम्राटों के सम्मान में मन्दिर बनवाये होंगे। और अधिकतर दबाव स्थानीय स्तर पर अधिक आया होगा। याद रखें कि हमने कहा था कि जब हम पहली सदी में उत्पीड़न और पीड़ा के बारे में सोचते हैं तो हमें जरूरी नहीं कि सम्राट खुद ईसाइयों के खिलाफ आधिकारिक प्रतिशोध की मंजूरी दे रहा हो ताकि उन्हें सड़क पर खींचकर उनका सिर काट दिया जाए और इस तरह की चीजों की जाएं, हालाँकि ऐसा हुआ था। बाद में और कभी-कभी।

लेकिन अधिकांश उत्पीड़न और पीड़ा छिटपुट और स्थानीय थी। यह स्थानीय अधिकारी ही रहे होंगे जो रोम के साथ पक्षपात बनाए रखने और उनके द्वारा प्रदान की गई सभी चीजों के कारण रोम के प्रति सम्मान और निष्ठा और कृतज्ञता दिखाने के इच्छुक थे। और यही वह है जिसे जॉन संबोधित कर रहे हैं, कुछ ईसाइयों का यह सोचने का प्रलोभन कि वे यीशु मसीह के प्रति निष्ठा दिखा सकते हैं, फिर भी सिंहासन पर बैठे सम्राट और रोमन साम्राज्य के प्रति भी निष्ठा बना सकते हैं, जो उसने पेश किया था।

और अक्सर यह पूजा और निष्ठा तथा अनन्य वफ़ादारी का मुद्दा बन गया। सच्चा भगवान कौन था? वास्तव में सिंहासन पर कौन बैठा था? क्या यह स्वयं ईश्वर था या सीज़र था? वे अपनी वफ़ादारी किसे देंगे? तो, रहस्योद्घाटन मुख्य रूप से जो करता है वह यह है कि रहस्योद्घाटन भविष्य में क्या होने वाला है इसकी भविष्यवाणी नहीं है। यह रोम की वास्तविक प्रकृति को भविष्यसूचक रूप से उजागर करने का एक प्रयास है।

फिर से, अनुभवजन्य रूप से याद रखें कि जब लोग पहली शताब्दी को देखते हैं, तो वे इस भव्य साम्राज्य को देखते हैं कि सीज़र सिंहासन पर है और यह बढ़ता और विस्तारित होता रहता है और यह अपने शासन के तहत आने वाले लोगों को शांति और सभी प्रकार के लाभ और धन प्रदान करता है। लेकिन जॉन जो करना चाहता है वह असली रंग उजागर करना है। रहस्योद्घाटन को एक सर्वनाश के रूप में याद रखें, इसका मतलब है कि यह अनावरण करता है, यह इतिहास के पीछे के पर्दे को पीछे खींचता है ताकि उन्हें चीजों की वास्तविक प्रकृति को देखने की अनुमति मिल सके।

और इसलिए, रहस्योद्घाटन यह करता है कि पुस्तक का प्राथमिक उद्देश्य या प्राथमिक उद्देश्यों में से एक रोमन शासन की वास्तविक प्रकृति को उजागर करना है। यह वह लाभकारी, अद्भुत इकाई नहीं है जैसी प्रतीत होती है, बल्कि इसके बजाय, यह रोम के दिखावे को उजागर करती है। यह रोम को अहंकारी और घमंडी के रूप में उजागर करता है।

यह रोम को गरीबों पर अत्याचार करने वाले और ईश्वर के लोगों के हत्यारे के रूप में उजागर करता है। यह रोम को विशेष रूप से गरीबों की कीमत पर धन संचय करने और धन इकट्ठा करने वाले के रूप में उजागर करता है। यह रोम को एक रक्तपिपासु जानवर के रूप में चित्रित करता है जो ईसाइयों और इसका विरोध करने वाले किसी भी अन्य व्यक्ति पर दावत देता है।

तो जॉन जो करने की कोशिश कर रहा है वह वही है जो पुराने नियम के भविष्यवक्ता करते हैं। और यही कारण है कि जॉन अक्सर यशायाह और ईजेकील और यिर्मयाह जैसे पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की बहुत सारी कल्पना और भाषा का उपयोग करते हैं, क्योंकि उन भविष्यवक्ताओं ने भी अपने समय में उन शहरों और साम्राज्यों की आलोचना की थी जो ईश्वर-विरोधी, ईश्वरीय, जो अहंकारी भी थे और दिखावा करने वाला और अभिमानी और परमेश्वर के लोगों पर अत्याचार करने वाला और धन संचय करने वाला, आदि, आदि। और अब जॉन पहली शताब्दी में एक समान स्थिति का सामना करता है, सिवाय इसके कि इस बार यह ऐतिहासिक बेबीलोन या मिस्र या कोई अन्य शहर नहीं है।

अब यह रोम शहर है. और इसलिए मुख्य रूप से रहस्योद्घाटन रोम की वास्तविक प्रकृति को उजागर करने की कोशिश कर रहा है ताकि ईसाई इसे देने के लिए प्रलोभित न हों, और ताकि जो लोग पीड़ित हैं उन्हें दृढ़ रहने और सहन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके क्योंकि जॉन वास्तव में दिखाता है कि इतिहास किस ओर जा रहा है, यह कहाँ खत्म होने वाला है। युगांत विज्ञान है, और अभी तक इसमें नहीं है।

लेकिन फिर, ऐसा इसलिए है ताकि वे अपनी पहली सदी की स्थिति को एक नई रोशनी में देख सकें। वे रोम को उसी रूप में देख सकते हैं जैसा वह वास्तव में है, और इसलिए इसका विरोध करते हैं और साम्राज्य के आगे झुकते नहीं हैं। हमने यह भी कहा कि रहस्योद्घाटन या उनमें से एक का निकटतम आधुनिक सादृश्य राजनीतिक कार्टून होगा।

मैंने आपको सुझाव दिया कि एक राजनीतिक कार्टून होने के बावजूद, यह राजनीतिक या ऐतिहासिक रूप से वास्तविक घटनाओं या वास्तव में घटित होने वाली चीजों को संदर्भित करता है, यह उनका वैज्ञानिक या शाब्दिक वर्णन नहीं करता है, बल्कि अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा में उनका वर्णन करता है। तो, इस कार्टून का मुद्दा यह नहीं है कि आप कहीं जाएं और देखें कि यह वास्तव में हो रहा है। मुद्दा यह है कि यह अमेरिकी महाद्वीप में गैस की कीमतों में हास्यास्पद वृद्धि की वास्तविक स्थिति के बारे में क्या कहता है।

यह उस पर एक तरह की टिप्पणी है। यह आपको इसे एक नई रोशनी में देखने में मदद करता है। लेखक आपको बस एक छोटा सा पैराग्राफ दे सकता था और बता सकता था कि गैस की बढ़ती कीमतों की स्थिति के बारे में वह क्या सोचता है, लेकिन एक राजनीतिक कार्टून के माध्यम

से, वह आपकी भावनाओं को जगाने और आपको प्रतिक्रिया देने और स्थिति को देखने के लिए प्रेरित करने में सक्षम है। एक नई रोशनी में।

एक अर्थ में, रहस्योद्घाटन एक लंबा राजनीतिक कार्टून है जिसमें यह पाठकों को इंपीरियल रोम और उनकी पहली शताब्दी की स्थिति को एक नई रोशनी में देखने को मिलता है। इसलिए, रहस्योद्घाटन, एक राजनीतिक कार्टून की तरह, ग्राफिक, कभी-कभी अतिरंजित प्रतीकवाद का उपयोग करता है जिसे शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाना चाहिए, हालांकि यह वास्तविक घटनाओं को संदर्भित करता है जो पहली शताब्दी के रोम में हो रहे हैं और भविष्य में घटित होंगे, यह उन घटनाओं का वर्णन करता है अत्यधिक प्रतीकात्मक भाषा के साथ, जो अक्सर पुराने नियम से आती है। लेकिन आइए रहस्योद्घाटन में कई पाठों को देखें जो शायद बताते हैं कि यह कैसे काम करता है।

पहला, पहला खंड जिसे मैं देखना चाहता हूँ वह प्रकाशितवाक्य में विपत्तियाँ हैं। रहस्योद्घाटन वास्तव में सात विपत्तियों के तीन सेटों के इर्द-गिर्द घूमता है। तुम्हारे पास सात मुहरें और फिर सात तुरहियाँ और फिर सात कटोरे हैं।

और जैसे ही सातों मुहरों में से प्रत्येक को खोला जाता है, जैसे ही सातों तुरहियों में से प्रत्येक को फूँका जाता है, और जैसे ही सातों कटोरे में से प्रत्येक को उंडेला जाता है, तो कुछ घटित होता है। और जब आप उन सभी को जोड़ते हैं, विशेष रूप से तुरही और कटोरे, तो आप पाते हैं कि उनमें जो समानता है वह यह है कि तुरही और कटोरे में पानी खून में बदल जाता है, और आपके पास ऐसे लोग हैं जिनके शरीर पर घाव निकल रहे हैं, आप अंधेरा छा गया है, कभी-कभी यह एक तिहाई या आधा या उससे भी अधिक होता है, जब तक आप कटोरे तक पहुंचते हैं, पूरी पृथ्वी अंधकारमय हो जाती है, आपके पास टिड्डियां होती हैं, फिर से वे अजीब टिड्डियां होती हैं जिनके सिर इंसानों की तरह होते हैं और लंबे बाल मादा की तरह होते हैं और शेर जैसे दांत और बिच्छू जैसी पूंछ, फिर भी वे अभी भी स्पष्ट रूप से टिड्डियां हैं। आपके पास मेंढकों का संदर्भ है।

अब जब आप यह सुनते हैं, तो आपके मन में क्या उत्पन्न होता है? आपने ये बातें पहले कहाँ सुनी हैं? पलायन. निर्गमन की विपत्तियों को याद करें जहां पानी खून में बदल जाता है, मिस्त्रियों पर घाव हो जाते हैं, भूमि पर अंधेरा छा जाता है, टिड्डियों की विपत्ति होती है, और मेंढक की विपत्ति पानी से निकलती है। तो, जॉन क्या कर रहा है? मूल रूप से, वह बस उस निर्णय का मॉडल तैयार कर रहा है जिसका वह वर्णन करता है कि क्या होने वाला है, वह इसे निर्गमन पर मॉडल करता है।

यह ऐसा है जैसे जॉन कहना चाहता है, उसी तरह, कि भगवान ने मिस्त्र के दुष्ट साम्राज्य का न्याय किया, इसलिए वह रोम का भी न्याय करेगा। मुझे आश्चर्य है कि क्या ये विपत्तियाँ, रहस्योद्घाटन में इनमें से बहुत सारी विपत्तियाँ शाही रोम पर हमला करने के लिए नहीं हैं। फिर से, केवल यह दिखाने के लिए कि उसी तरह, भगवान ने अतीत में, निर्गमन में, एक दुष्ट साम्राज्य का न्याय किया था, इसलिए भगवान उन साम्राज्यों का न्याय करेंगे जो भगवान का विरोध करते हैं और उनके लोगों पर अत्याचार करते हैं और अहंकारपूर्वक खुद को भगवान के ऊपर स्थापित करते हैं।

परमेश्वर उनका भी उसी तरह न्याय करेगा जैसे उसने निर्गमन में किया था। अब, मुझे नहीं पता, मैं फिर से यह मानता हूँ कि इन विपत्तियों को प्रतीकात्मक रूप से समझा जाना चाहिए। समस्या यह है कि मैं निश्चित नहीं हूँ कि वे किसका प्रतीक हैं।

क्या वे वास्तविक भौतिक घटनाओं का प्रतीक हैं? या ये अधिक आध्यात्मिक विपत्तियाँ हैं? या दोनों का संयोजन, शायद, सबसे अच्छा विकल्प है? लेकिन फिर भी, ऐसा नहीं लगता कि जॉन को आपको यह बताने में दिलचस्पी है कि चीज़ें वास्तव में कैसी दिखेंगी। उसकी इसमें अधिक रुचि है कि आप निर्गमन को याद करें। विपत्तियों, मुहरों, तुरहियों और कटोरे का मुख्य बिंदु, आपके लिए यह पता लगाना नहीं है कि परमेश्वर वास्तव में कैसे न्याय करेगा।

मुख्य बात यह है कि आपको याद होगा कि जैसे निर्गमन के दिन भगवान ने न्याय किया था, वैसे ही वह रोम का भी न्याय करेगा। और फिर, लेखक ऐसा बार-बार करता है। वह यह दिखाने के लिए पुराने नियम की ओर अपील करता है कि जिस प्रकार पुराने नियम में परमेश्वर अपने लोगों के साथ काम कर रहा था और उसी प्रकार उसने पुराने नियम में दुष्ट साम्राज्यों का न्याय किया था, अब वह एक और दुष्ट साम्राज्य का न्याय करने वाला है, और वह शाही रोम है।

तो फिर, विपत्तियाँ निर्गमन के आधार पर बनाई गई हैं या उसके आधार पर बनाई गई हैं, और मुद्दा यह पता लगाने का नहीं है कि वे क्या संदर्भित करते हैं। मुख्य मुद्दा यह प्रदर्शित करना है कि ईश्वर उसी तरह न्याय करेगा जैसे उसने निर्गमन में किया था। प्रकाशितवाक्य का एक अन्य महत्वपूर्ण भाग संख्याएँ हैं।

समय की खातिर मैं आपके नोट्स में कुछ अनुभाग छोड़ रहा हूँ, लेकिन मुझे संख्याओं के बारे में संक्षेप में कुछ कहने दीजिए। मैंने आपको अपने नोट्स में संख्याओं की एक श्रृंखला दी है, और मेरा उन सभी के बारे में व्यक्तिगत रूप से बात करने का इरादा नहीं है, लेकिन संख्या साढ़े तीन साल, संख्या 666, संख्या 12, संख्या 1,000, संख्या 10, संख्या 4, संख्या 7। वे सभी संख्याएँ प्रकाशितवाक्य में महत्वपूर्ण हैं, लेकिन फिर से, मेरी राय में, उन सभी को प्रतीकात्मक रूप से समझा जाना चाहिए। संख्याओं का मुख्य महत्व उनका गणितीय मूल्य नहीं है, बल्कि मुख्य महत्व उनका प्रतीकात्मक मूल्य है।

तो, उदाहरण के लिए, एक बहुत ही आसान बात यह है कि जॉन को सात विपत्तियाँ क्यों होंगी? जैसा कि हमने कहा, यह वह स्लाइड है जो मैंने पहले दिखाई थी। वहाँ सात मुहरें, सात तुरहियाँ और सात बैल हैं। सात नंबर क्यों? क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि यदि आप वहाँ कैलकुलेटर लेकर बैठें, तो आप सात सटीक विपत्तियाँ गिन सकते हैं? अथवा वह सात अंक का प्रयोग क्यों करेगा? पृथ्वी का निर्माण सात दिनों में हुआ था, जिसके बारे में आप बिल्कुल सही हैं, उस विचार को इस आधार पर तैयार किया गया था कि संख्या सात पूर्णता या पूर्णता का संकेत देती है, जो संभवतः सृष्टि के सात दिनों में परिलक्षित होती है।

तो, सृष्टि के सात दिनों से शुरू करें, तो संख्या सात पूर्णता या पूर्णता का प्रतीकात्मक महत्व लेती है। इसलिए, जब आप सात विपत्तियों या सात मुहरों के बारे में पढ़ते हैं, तो मुद्दा यह नहीं है कि सात वास्तविक विपत्तियाँ होंगी जो एक दूसरे का अनुसरण करती हैं। लेकिन मुद्दा यह है कि सात

पूर्णता या पूर्णता का प्रतीक है, निर्णयों की पूरी संख्या या अपने लोगों पर परमेश्वर का पूर्ण, पूर्ण न्याय।

संख्या 12 संभवतः इज़राइल की 12 जनजातियों तक जाती है। जहाँ भी आप प्रकाशितवाक्य में 12 या उसके गुणकों को देखते हैं, जैसे 144, 12 गुना 12, उस 12 का महत्व इज़राइल के 12 जनजातियों और 12 प्रेरितों तक जाता है। 12 भगवान के लोगों का प्रतीक है।

666. मैं हमेशा कहानी सुनाता हूँ जब... मुझे नहीं पता कि कोई सोल फेस्ट में जाता है या नहीं। आप में से कुछ लोग न्यू हैम्पशायर में सोल फेस्ट में गए हैं।

और यदि नहीं, तो मैं आपको वहाँ जाने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। और यहाँ गॉर्डन के आसपास इसका विज्ञापन किया जा रहा है। लेकिन जब मैं मिनेसोटा में रहता था तो हमारे बीच कुछ ऐसा ही था जिसे स्पिरिट फेस्ट कहा जाता था।

यह उसी तरह की चीज़ थी, एक ईसाई बैंड कला उत्सव। और हमें अपनी बांहों में एक छोटा सा टैग रखना था। और मुझे उस दिन लाइन में अपना टैग मिल गया।

और मेरे टैग पर अंतिम तीन नंबर 666 थे। और, निश्चित रूप से, मैंने इसे चालू रखा और मैंने इसे पहना। मैं इसे उतारने वाला नहीं था।

लेकिन कुछ लोग आश्चर्यचकित थे कि मैं ऐसा करूँगा। लेकिन शायद उन्होंने कभी इस तरह का सवाल नहीं पूछा, मुझे आश्चर्य है कि क्या ऐसा केवल इसलिए हुआ क्योंकि मेरे पहले वाले व्यक्ति को 665 अंक मिले थे और मेरे बाद वाले व्यक्ति को 667 अंक मिले थे। तो, यह सिर्फ एक संयोग की बात थी।

लेकिन अक्सर हम उस संख्या 666 को लेते हैं और हम उन वास्तविक संख्याओं से एक बड़ी बात बना लेते हैं। लेकिन, फिर से, जब आप इसके बारे में सोचते हैं, तो 666 पर विचार करने के कई तरीके हैं। 666 संख्या 7, 777 में से एक कमी के अनुरूप होगा।

संख्या 666 में शायद नीरो नाम का भी संदर्भ था जो प्रकाशितवाक्य लिखे जाने से कई साल पहले एक रोमन सम्राट था और ईसाइयों के साथ व्यवहार करने के तरीके में एक विशेष रूप से भयानक सम्राट होने के लिए जाना जाता था। तो शायद वह उन्हें चाहता था, और शायद जॉन भी चाहता था कि वे नीरो को याद करें और वह लोगों के साथ कैसा व्यवहार करता था। और यही सच्ची भावना है और यही रोमन शासन का असली रंग है।

तो, 666 का मुद्दा वह नहीं है जहाँ हमें बारकोड में या क्रेडिट कार्ड पर या लाइसेंस प्लेट या फोन नंबर में वे शाब्दिक संख्याएँ मिलती हैं। वह बात नहीं है। आमतौर पर, यह महज़ संयोग है।

उस संख्या के बारे में जो महत्वपूर्ण है वह वह है जिसका वह प्रतीक है। यह परमेश्वर के लोगों के प्रति शैतानी विरोध का प्रतीक है। पहली सदी के पाठकों के लिए यह ईश्वर और उसके लोगों के विरोध में रोम का प्रतीक था।

और वह जो पहली शताब्दी में मानव शक्ति के दिखावटी, अहंकारी प्रदर्शन का प्रतीक था। और 666 ने इसका संकेत दिया। संभवतः, फिर से, जैसा कि नीरो में सन्निहित है।

इसलिए, मेरी राय में, प्रकाशितवाक्य में सभी संख्याओं को तारीखों, समयों या विशिष्ट संख्याओं के साथ आने के लिए जोड़ा या गणना नहीं किया जाना चाहिए। इसके बजाय, वे उनके प्रतीकात्मक मूल्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। एक अन्य पाठ, प्रकाशितवाक्य 12-13।

प्रकाशितवाक्य 12-13 एक अजगर की कहानी है जो पैदा होने वाले एक बच्चे को निगलने का प्रयास करता है, लेकिन वह सफल नहीं हो पाता है। और फिर ड्रैगन जाता है और अपनी मदद के लिए दो दोस्तों को बुलाता है। दो जानवर.

एक पशु भूमि से, एक पशु समुद्र से, और एक पशु भूमि से। उनका मुख्य कार्य दुनिया को उनकी पूजा करने के लिए प्रेरित करना है, लेकिन साथ ही इनकार करने वाले किसी भी व्यक्ति पर अत्याचार करना है, विशेष रूप से ईसाई जो भगवान के वचन का पालन करते हैं और यीशु मसीह की गवाही रखते हैं। अब, फिर से, पहली सदी के संदर्भ में सोचते हुए, अध्याय 12 में ड्रैगन, ड्रैगन को यह पता लगाना आसान है कि वह किसको संदर्भित करता है क्योंकि जॉन बाहर आता है और हमें बताता है।

यह पुराने ज़माने का साँप है। यह उत्पत्ति अध्याय 1, 2, और 3 से शैतान है। इसलिए जॉन हमें बताता है कि ड्रैगन कौन है। लेकिन फिर ड्रैगन जाता है और अपनी मदद के लिए दो साथियों, दो जानवरों, एक समुद्र से और एक जमीन से जानवर को बुलाता है।

और, फिर से, दो जानवरों का काम मूल रूप से हर किसी को उनकी पूजा करने और ड्रैगन की पूजा करने के लिए प्रेरित करना और जो कोई भी पालन करने से इनकार करता है उसे सताना है। अब, पहले पाठकों के संदर्भ में सोचें, तो संभवतः उन्होंने इन जानवरों की पहचान किसके साथ की होगी? आपका अनुमान क्या होगा? स्थिति को देखते हुए जॉन संबोधित कर रहे हैं। यदि आप रोमन साम्राज्य में रहने वाले पहली सदी के ईसाई हैं और आप इस अध्याय को पढ़ते हैं और आप इन जानवरों की कहानी पढ़ते हैं जो भगवान के लोगों को पाने के लिए निकले हैं और जो खुद को पूरी पृथ्वी पर संप्रभु स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं पूजा लागू करें, आप उनकी पहचान किसके साथ करेंगे? संभवतः रोमन साम्राज्य और रोमन सम्राट।

और मुझे विश्वास है कि जब जॉन के पाठक पहली बार उसे पढ़ेंगे, तो वे उसी के साथ पहचान करेंगे। तो, फिर, क्या आप देखते हैं कि जॉन क्या कर रहा है? वह रोम की प्रकृति को उजागर कर रहा है। जब वे अनुभवजन्य रूप से इतिहास के चरण में देखते हैं, तो वे इस भव्य साम्राज्य को देखते हैं जो बढ़ रहा है और बढ़ रहा है और किसी को भी शांति और धन और लाभ प्रदान करता है और जो कोई भी इसके अधीन होता है उसे सुरक्षा प्रदान करता है।

यह ग्लैमरस और आकर्षक है। फिर भी जॉन रोम की इस सर्वनाशकारी आलोचना में उन्हें उजागर करता है कि वे वास्तव में कौन हैं। वह ईसाइयों से कह रहा है, उस दिखावे के पीछे, रोम

वास्तव में एक घृणित, रक्तपिपासु जानवर है जो वास्तव में ड्रैगन, शैतान की सेवा में है, जो ईसाइयों पर हमला करने के प्रयासों के पीछे का सच्चा व्यक्ति है।

तो जॉन अध्याय 12 और 13 में जो करने की कोशिश कर रहा है वह उन्हें दिखाना है, और यह महत्वपूर्ण है, ईसाइयों को उनके संघर्ष की वास्तविक प्रकृति दिखाने के लिए। फिर, उनका असली संघर्ष सिर्फ रोम के साथ नहीं है, बल्कि अंततः ड्रैगन, शैतान, भगवान के लोगों को खत्म करने के इन प्रयासों के पीछे है। जैसे-जैसे दबाव बढ़ता है और जैसे-जैसे रोम के साथ उनके रिश्ते में गर्माहट आती है, वे समझ सकते हैं कि समझौता करने के प्रलोभन या किसी भी उत्पीड़न के पीछे असली ताकत ड्रैगन ही है, उत्पत्ति का वह सदियों पुराना साँप, जो परमेश्वर के लोगों को पाने के लिए निकला है।

इसलिए, इसका उद्देश्य ईसाइयों को उनकी अपनी स्थिति को समझने और उससे निपटने में मदद करना है, ताकि उन्हें उनके संघर्ष की वास्तविक प्रकृति दिखाई दे सके। यह प्रकाशितवाक्य 12 और 13 का प्राथमिक संदेश है, ईसाइयों को यह दिखाने के लिए कि आप जिसका सामना कर रहे हैं उसका वास्तविक स्वरूप यही है। जैसे ही आप उत्पीड़न या समझौता करने के प्रलोभन का सामना करते हैं, मैं पर्दा उठाता हूँ और आपको इतिहास के पर्दे के पीछे के संघर्ष की वास्तविक प्रकृति दिखाता हूँ।

यह है... अध्याय 12 और 13 एक तरह से पॉल द्वारा इफिसियों में कही गई बातों का प्रतीकात्मक चित्रण है। आपकी लड़ाई मांस और रक्त के साथ नहीं है, जो कि रोमन सम्राट और रोमन अधिकारियों के साथ रहस्योद्घाटन के लिए है, बल्कि इसके बजाय, यह स्वर्गीय क्षेत्रों में शासकों और अधिकारियों के साथ है। और जॉन यही करने की कोशिश कर रहा है, उनके संघर्ष की वास्तविक प्रकृति और रोमन शाही शासन की वास्तविक प्रकृति को उजागर करने के लिए।

अब, ऐसा करने के लिए, जॉन कुछ बहुत दिलचस्प करता है। यदि आप उत्पत्ति की पुस्तक को याद करते हैं, तो आदम और हव्वा के पाप के बाद उत्पत्ति की पुस्तक को याद करें, भगवान दोनों मुद्दों को अभिशाप देते हैं, मानवता पर अभिशाप, लेकिन स्वयं शैतान पर। और स्मरण रखो, वह शैतान से कहता है, कि तू भूमि की मिट्टी खाएगा, और पेट के बल भूमि पर रेंगेगा।

और वह उस से यह भी कहता है, कि तेरा स्त्री के साथ झगड़ा होगा, और तू घायल हो जाएगा... वह कहता है, कि तेरा और स्त्री का, तेरे वंश का, और उसके वंश का, अर्थात् साँप, शैतान की सन्तान, और उस स्त्री का झगड़ा होगा। संतानों में संघर्ष होगा। और फिर वह कहता है, शैतान जो तेरा वंश है, उसकी एड़ी को कुचल डालेगा, परन्तु स्त्री का वंश तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तुझे सत्यानाश कर डालेगा। यह सब उत्पत्ति अध्याय 3 में है। अब, ध्यान दें कि जब आप उत्पत्ति 12 और 13 पर पहुँचते हैं तो क्या होता है।

सबसे पहले, जॉन अध्याय में साँप की पहचान करता है... जॉन अध्याय 12, 3, और 9 में शैतान की पहचान साँप के रूप में करता है। और वह उसे पुराने साँप भी कहता है। अर्थात्, यह शैतान है, वह साँप है जिसने आदम और हव्वा को पाप करने के लिए बहकाया और प्रलोभित किया।

अब, जॉन का कहना है कि प्रकाशितवाक्य 12 में ड्रैगन उसी साँप से कम नहीं है जो फिर से अपना बदसूरत सिर उठा रहा है।

स्त्री और बीज. ध्यान दें कि रहस्योद्घाटन में कितनी बार, ये कोष्ठक में रहस्योद्घाटन के संदर्भ हैं। ध्यान दें कि प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 में कितनी बार महिला और उसकी संतानों का संदर्भ है।

परमेश्वर के लोगों को एक महिला और उसकी संतान के रूप में चित्रित किया गया है, जो फिर से उत्पत्ति अध्याय 3, श्लोक 14 से 16 तक जाता है। तथ्य यह है कि उत्पत्ति 3 में श्राप का एक हिस्सा, यदि आपको याद हो, वह महिला थी प्रसव पीड़ा. यहाँ, प्रकाशितवाक्य अध्याय 3 में, वह महिला जो परमेश्वर के लोगों का प्रतीक है, को प्रसव पीड़ा से पीड़ित या दर्द में होने के रूप में चित्रित किया गया है क्योंकि वह जन्म देने वाली है।

वह एक बेटे को जन्म देती है, जो स्पष्ट रूप से ईसा मसीह का संदर्भ है। वह साँप का सिर कुचल डालेगा। दिलचस्प बात यह है कि, फिर से, याद रखें, उत्पत्ति 3 में वादे का वह हिस्सा यह है कि महिला की संतान साँप के सिर को कुचल देगी।

प्रकाशितवाक्य अध्याय 13 में, जानवरों में से एक ऐसा प्रतीत होता है मानो उसका सिर कुचल दिया गया हो या मार दिया गया हो। मुझे खेद है, मुझे लगता है बस इतना ही। दूसरा एक बेटे का संदर्भ है।

अध्याय 12 में यीशु मसीह वह महिला है जो एक बेटे को जन्म देती है, जो उसकी पहली संतान है, जो स्पष्ट रूप से ईसा मसीह का संदर्भ है। लेकिन क्या आप देख रहे हैं कि क्या हो रहा है? ये सभी संदर्भ, मेरे लिए, सुझाव देते हैं कि जॉन के मन में उत्पत्ति अध्याय 3 और श्राप का संदर्भ था, जहाँ, फिर से, भगवान ने साँप से कहा कि तुम्हारे और उस स्त्री के बीच संघर्ष और शत्रुता होगी, और होगी तेरे वंश वा वंश और उसके वंश के बीच बैर हो, और उसका वंश तेरे सिर को कुचल डालेगा। यद्यपि तू उसकी संतान की एड़ी को कुचलेगा, तौभी उसकी संतान सचमुच तुम्हारा सिर कुचल डालेगी, और उसे पीड़ा होगी, और प्रसव पीड़ा होगी।

वे सभी तत्व प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 और 13 में पाए जाते हैं। तो जॉन क्या कर रहा है? मूल रूप से, वह अपने पाठकों से कह रहा है, देखो, आप रोमन शासन के साथ संघर्ष करते हुए किस चीज का सामना कर रहे हैं, आप वास्तव में जिस चीज से गुजर रहे हैं वह इस सदियों पुराने संघर्ष से कम नहीं है जो उत्पत्ति अध्याय 3 तक जाता है। तो, फिर से, आपको इससे आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए, या आपको चौंकना नहीं चाहिए, और अब वे इसे एक नई रोशनी में देख सकते हैं। इंपीरियल रोम से निपटने की कोशिश में उन्हें जिस चीज का सामना करना पड़ता है वह सिर्फ उत्पत्ति अध्याय 3 का फिर से सामने आना है।

यह उस सदियों पुराने संघर्ष का एक हिस्सा है जो सृष्टि से चला आ रहा है, और अब यह रोम के साथ ईसाइयों के संघर्ष में फिर से उभर रहा है। तो, यह ईसाइयों को रोम के साथ उनके संघर्ष को एक नई रोशनी में देखने में मदद करने, इससे निपटने में मदद करने, रोम का विरोध करने, यीशु

मसीह के प्रति अपनी गवाही बनाए रखने, संघर्ष की वास्तविक प्रकृति को समझने में मदद करने का एक और तरीका है। यह सदियों पुराने संघर्ष का एक हिस्सा है जो सृष्टि की शुरुआत से चला आ रहा है।

इसलिए, मुझे लगता है कि जॉन ने जानबूझकर उत्पत्ति अध्याय 3, श्लोक 14 से 16 तक को ध्यान में रखा था, जब वह इस दर्शन को देखता है, और अब जब वह इसे लिखता है और अपने पाठकों को इंपीरियल रोम से निपटने में मदद करने के लिए इसकी रचना करता है। एक अन्य खंड जिसे मैं संक्षेप में देखना चाहता हूँ वह प्रकाशितवाक्य के अंतिम दो अध्याय हैं, अध्याय 21 और 22, जहां लेखक एक दुल्हन या नए यरूशलेम की तुलना और विरोधाभास करता है, जो पुराने नियम में आम था। अक्सर, यरूशलेम और उसके लोगों की तुलना भगवान की दुल्हन से की जाती थी।

अब जॉन नए यरूशलेम का जिक्र करते हुए उस कल्पना का फिर से उपयोग करता है। इसलिए दुल्हन, न्यू जेरूसलम की तुलना वेश्या बेबीलोन से की जाती है। और फिर, जॉन सीधे पुराने नियम से कल्पना का उपयोग करता है।

एक बार फिर रुकें और मेरे साथ सोचें। यदि आप पहली सदी के प्रकाशितवाक्य को पढ़ने वाले पाठक हैं, तो आप बेबीलोन की पहचान किससे करेंगे? पुराने नियम में बेबीलोन एक ऐतिहासिक शहर था, एक ऐसा शहर जिसने परमेश्वर के लोगों पर कब्जा कर लिया था। आप इसके बारे में डैनियल की किताब में पढ़ सकते हैं, जहाँ तक बेबीलोन के प्रति डैनियल और अन्य पैगम्बरों के रवैये का सवाल है।

लेकिन फिर, यदि आप पहली सदी के पाठक हैं जो किताब सुन रहे हैं या प्रकाशितवाक्य पढ़ रहे हैं, तो सबसे अधिक संभावना है कि आप बेबीलोन की पहचान किससे करेंगे? संभवतः रोम। और फिर, क्या आप देखते हैं कि जॉन क्या कर रहा है? वह कह रहा है, कि जिस तरह भगवान ने अतीत में बेबीलोन, मिस्र आदि जैसे दुष्ट साम्राज्यों का न्याय किया था, उसी तरह भगवान रोम का भी न्याय करेंगे। और सचमुच उसने ऐसा किया।

इस पुस्तक के लिखे जाने के लगभग 300 वर्ष बाद, परमेश्वर ने रोम को उसके अंत तक पहुँचाया। लेकिन मुद्दा यह है कि, यदि वे ऐसा नहीं करते... यदि रोम नष्ट होने वाला है और जॉन नहीं चाहता कि उसके पाठकों को इसका कोई हिस्सा मिले, तो ऐसा नहीं है कि वे इसमें शारीरिक रूप से नहीं रह सकते, लेकिन यदि वह ऐसा नहीं करता है यदि आप चाहते हैं कि वे अपने अहंकार, ईश्वर-विरोधी सोच को स्वीकार करें, तो उनके पास एक शहर होना चाहिए, उनके पास रहने के लिए कोई जगह होनी चाहिए। यदि उन्हें बेबीलोन का हिस्सा नहीं बनना है, तो उन्हें कहीं न कहीं जाना होगा।

और इसलिए, किताब दुल्हन, न्यू जेरूसलम और जो लोग वफादार हैं, के साथ समाप्त होती है। जॉन के पाठकों के लिए, और मैं आज के ईसाइयों के लिए कहूंगा, जो ईमानदारी से रोमन शाही शासन और उसके सभी आशीर्वादों, उसके अहंकार, उसके अभिमान, उसकी संप्रभु शक्ति के दिखावटी प्रदर्शन को छोड़ने के प्रलोभन का विरोध करते हैं और इनकार करते हैं और विरोध

करते हैं। , तब जॉन कहता है, तुम्हें कहीं जाना है और तुम्हारे पास कोई है जिसका तुम सदस्य हो, और वह दुल्हन है, नया यरूशलेम। अब मैं इस पाठ के बारे में कुछ बातें कहना चाहता हूँ।

मैं चाहता हूँ कि मेरे पास इसके बारे में बात करने के लिए अधिक समय हो, लेकिन मैं दो बातों पर जोर देना चाहता हूँ। नंबर एक, अध्याय 21 और 22 में न्यू जेरूसलम की कल्पना, मुझे लगता है कि यह स्वयं लोगों का प्रतीक है। दूसरे शब्दों में, मुझे नहीं लगता कि जॉन विशेष रूप से एक शाब्दिक शहर का वर्णन कर रहा है, ऐसा नहीं है कि नई रचना में एक नहीं होगा या कई होंगे, लेकिन मुख्य रूप से जॉन जो वर्णन कर रहा है, जब वह नए यरूशलेम का वर्णन करता है, तो वह वर्णन कर रहा है लोग स्वयं, नई सृष्टि में परमेश्वर के सिद्ध लोग।

यह बहुत महत्वपूर्ण है। जॉन किसी वास्तविक शाब्दिक शहर का वर्णन नहीं कर रहा है। वास्तव में, मैंने देखा है कि कुछ लोग इसे ऐसे बनाने की कोशिश करते हैं जैसे कि जॉन आपको इसका वास्तुशिल्प चित्रण या ब्लूप्रिंट दे रहा हो।

वह ऐसा नहीं कर रहा है। जॉन किसी शाब्दिक शहर का वर्णन नहीं कर रहा है। फिर, वह स्वयं लोगों का वर्णन कर रहा है।

और जब आप अध्याय 21 और 22 पढ़ते हैं, तो शहर के सभी माप, ध्यान दें कि वे सभी 12 के गुणज हैं, भगवान के लोगों की संख्या। तो, नया यरूशलेम जिसका प्रतीक है, वह ईश्वर की उपस्थिति में, नई रचना में ईश्वर के सिद्ध लोग हैं। न्यू जेरूसलम के दर्शन के बारे में दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह हमारे अंतिम भाग्य को बिल्कुल भौतिक, सांसारिक रूप में चित्रित करता है।

फिर, हमने पहले भी इस बारे में बात की है, लेकिन भगवान के लोगों की अंतिम नियति कुछ असंबद्ध ज्ञानी-प्रकार का अस्तित्व नहीं है। रहस्योद्घाटन परमेश्वर के लोगों को एक नई पृथ्वी पर ले जाता है। एक अर्थ में, प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में स्वर्ग और पृथ्वी एक हो जाते हैं।

और परमेश्वर के लोग अपनी शेष अनंत काल की अवधि एक नई सृष्टि में अपने अस्तित्व में जीते हैं। एक नई रचना पर, बादलों में इधर-उधर तैरते हुए नहीं। सफ़ेद वस्त्र और ऐसी ही चीज़ों के साथ।

लेकिन इसके बजाय, वे एक बहुत ही सांसारिक, भौतिक अस्तित्व में अपनी अनंत काल तक जीवन जीते हैं। क्योंकि भगवान ने हमें इसी लिए बनाया है। और यह इस धरती से चाहे कितना भी अलग क्यों न हो, यह निश्चित रूप से कई मायनों में समान होने वाला है।

इसमें निरंतरता और असंततता दोनों है। लेकिन फिर, भगवान ने हमें इसी लिए बनाया है। और आप इसके बारे में सोचते हैं, मेरे लिए, यह एक भविष्य है, यह बलिदान देने लायक आशा है।

इस बारे में सोचें कि आपको इस सृष्टि, इस पृथ्वी और अपने जीवन में क्या पसंद है। इस बारे में सोचें कि पाप के सभी प्रभावों, सभी दुखों, सभी बीमारियों, सभी निराशाओं, सभी दर्दों और सभी

युद्धों को हटा देना कैसा होगा। सभी अच्छी चीजों और सुंदरता के बीच, वह सब कुछ जो इस जीवन को दुखी बनाता है, और इस जीवन को परेशान करता है, पूरी तरह से हटा दिया जाएगा।

और मेरे लिए, भविष्य की किसी चीज़ के लिए वर्तमान में बेबीलोन का त्याग करना उचित है। मैं नहीं जानता कि अगर मैं किसी अशरीरी आत्मा के रूप में इधर-उधर तैरता रहूँ तो इसका त्याग करना वास्तव में उचित होगा। लेकिन तथ्य यह है कि भगवान सभी चीजों को फिर से बनाने जा रहे हैं, और उन्होंने भगवान के लोगों के लिए जो नियति रखी है वह बहुत ही भौतिक, सांसारिक है, मेरे लिए वर्तमान में त्याग करने लायक है।

क्योंकि यही अभीष्ट लक्ष्य है। उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 से, मानवता के पाप के बाद से, भगवान का प्राथमिक उद्देश्य मानवता को पृथ्वी पर रहने के लिए पुनर्स्थापित करना है और भगवान उनके बीच में रहते हैं। और यह वही है जो आप प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में पाते हैं।

यहां तक कि यह गार्डन ऑफ ईडन इमेजरी का भी उपयोग करता है। अध्याय 22 पढ़ें। पहले पाँच पद, ईडन गार्डन का संदर्भ देते हैं।

जीवन की नदी के संदर्भ में जीवन का वृक्ष, जो बगीचे के विवरण में उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 को दर्शाता है। एक अंतिम बात। रहस्योद्घाटन का संदेश।

रहस्योद्घाटन केवल अंत समय और युगांत विज्ञान से कहीं अधिक है। इसके बजाय, प्रकाशितवाक्य ईश्वर के लोगों के लिए ईश्वर और मेम्ने की पूजा करने का आह्वान है, चाहे इसकी कोई भी कीमत क्यों न हो। यह एक आह्वान है, पहली सदी के ईसाइयों के लिए, यह रोम को उसके असल स्वरूप में उजागर करने, रोम का विरोध करने का आह्वान था।

हमारे लिए, यह साम्राज्य को बेनकाब करने और उसका विरोध करने का आह्वान है। वही ईश्वर-विरोधी, दिखावा करने वाला, अहंकारी, अपने संप्रभु शासन पर घमंड करने वाला, वही चीज़ जो रोम में मौजूद थी, ईश्वर हमें उसका विरोध करने के लिए कहते हैं, आज वह संयुक्त राज्य अमेरिका सहित, जहाँ कहीं भी पाई जाती है, उसका विरोध करने के लिए कहते हैं। लेकिन रहस्योद्घाटन ईश्वर और मेम्ने की पूजा करने का आह्वान है, न कि किसी अन्य मानवीय वस्तु या वस्तु की, चाहे इसकी कीमत कुछ भी हो।

लेकिन दूसरा, रहस्योद्घाटन सहन करने का आह्वान भी है। परमेश्वर अपने पीड़ित लोगों का न्याय करेगा। अच्छा।

रहस्योद्घाटन के बारे में मैं बस इतना ही कहना चाहता हूँ। इससे पहले कि मैं कोलोराडो की नई रचना के उद्घाटन के लिए रवाना हो जाऊँ, कोई प्रश्न? मज़ाक कर रहा हूँ। हाँ।

क्या फाइनल के लिए कोई समीक्षा सत्र होने वाला है? मैं उस पर काम कर रहा हूँ। मैं आपसे यह वादा नहीं कर सकता, लेकिन मैं फाइनल के लिए एक समीक्षा सत्र आयोजित करने का प्रयास कर रहा हूँ। आपको बहुत कुछ पता चल जाएगा, उम्मीद है, आपको सोमवार तक पता चल जाएगा।

यदि हां, तो संभवतः यह अगले बुधवार या गुरुवार को होगा। फिर, मैं आपसे कोई वादा नहीं करना चाहता। मैं इस पर काम कर रहा हूँ।

अगले सप्ताह आपकी परीक्षा के बाद एक अध्ययन मार्गदर्शिका होगी। फाइनल में देखने के लिए मैं आपके लिए एक अध्ययन मार्गदर्शिका लाऊंगा। यदि आपको पुराना परीक्षण नहीं मिला, तो आप मुझे ई-मेल कर सकते हैं।

मैं अगले पूरे सप्ताह अपने कार्यालय में नहीं रहूंगा, लेकिन यदि आप मुझे ई-मेल करेंगे, तो मुझे पुरानी परीक्षाओं की प्रतियां संलग्न करने में खुशी होगी। यह भी सुनिश्चित करें कि जब आप सोमवार को परीक्षा संख्या चार देंगे, तो फाइनल की पढ़ाई के लिए कॉपी अपने पास रखने के लिए आपका स्वागत है। धन्यवाद।

यह न्यू टेस्टामेंट हिस्ट्री एंड लिटरेचर, लेक्चर 35, द बुक ऑफ रिवीलेशन में डॉ. डेव मैथ्यूसन हैं।